SWAR SINDHU: NATIONAL PEER-REVIEWED/REFEREED JOURNAL OF MUSIC
A UGC CARE LISTED JOURNAL
ISSN 2320-7175 (O) | VOLUME 12, ISSUE 03, DECEMBER, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org

तबला वादन में रचनात्मकता

AMIT ANAND

1Teaching Assistant (Tabla), Institute of Music and Fine Arts, University of Jammu, Jammu

सार

संगीत, ललित कलाओं में एक बहुत ही गौरवशाली एवं उत्कृष्ट कला है। इसका माध्यम ध्वनि है। यह ध्वनि प्रकृति के कण-कण में किसी न किसी रूप में सदैव विद्यमान रहती है, जो मानव मन को संवेदनशील बनाती है, हृदय के भावों को छूती है तथा मन को संगीतमय ध्वनि से भर देती है। संगीत वह दिव्य स्वरूप है, जो नाद ब्रह्म के रूप में इस दुनिया में विद्यमान है। संगीत में लय एक महत्वपूर्ण तत्व है, जिसका निर्वाह ताल के माध्यम से किया जाता है। ताल को संगीत का अभिन्न अंग माना जाता है, क्योंकि ताल के माध्यम से ही संगीत में अनेकों रसों की निष्पति सम्भव होती है। ताल का प्रदर्शन वाद्य यंत्रों द्वारा किया जाता है। शास्त्रकारों ने सभी वाद्य यंत्रों को चार श्रेणियों में विभाजित किया है। जिनके नाम क्रमशः तत्त वाद्य, सुषिर वाद्य, घन वाद्य एवं अवनद्ध वाद्य है। ताल वाद्यों में अवनद्ध वाद्य का विशेष स्थान है। ताल वाद्य अंदर से खोखले एवं चमड़े से ढके होते हैं तथा इन्हें हाथ से बजाकर अथवा किसी वस्तु से आघात करके इनमें ध्वनि उत्पन्न की जाती है। दुन्दुभी, ढोल, डमरू, ढोलक, नाल, तबला आदि वाद्य इस श्रेणी में आते हैं। आधुनिक समय में इन सभी ताल वाद्यों में सर्वाधिक स्वीकार्य ताल वाद्य तबला ही माना जाता है। तबला वर्तमान समय का ऐसा लोकप्रिय ताल वाद्य है, जिसने स्वतंत्र वादन एवं संगत के कलात्मक प्रदर्शन के माध्यम से संगीत जगत में अपनी अलग पहचान बनाई है। तबला वादकों ने अपनी रचनात्मक शक्ति के आधार पर कई प्रकार की रचनाएँ की हैं जैसे: बोल, ठाह, दुगुन, गत, त्रिपल्ली, चैपल्ली, टुकड़े, मुखड़े, पेशकार, कायदे, रेला, उठान, इत्यादि की रचना कर तबले की कला में विकास किया।

मुख्य शब्द: *संगीत, तबला, ताल, ठेका, रचनात्मकता।*

भूमिका

संगीत, गायन, वादन और नृत्य तीनों विधाओं में रचनात्मकता एक महत्वपूर्ण तत्व है। संगीत के लिए रचनात्मकता एक चुनौती है। रचनावाद मूलतः ज्ञान आधारित शैक्षिक व्यावसायिक परिप्रेक्ष्य है। यह एक ऐसा गुण है जिसे सिखाया नहीं जा सकता, लेकिन सुनकर अवश्य विकसित किया जा सकता है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार आत्म-अभिव्यक्ति की क्रिया प्रत्येक मनुष्य में अंतर्निहित है, जब कोई व्यक्ति किसी वस्तु को देखता है या कोई आवाज़ सुनता है तो उसका दिल कांपने लगता है। उसकी स्वाभाविक क्रिया प्रवृत्ति उसे उस अनुभव को व्यक्त करने के लिए प्रेरित करती है। इस प्रकार मनुष्य अच्छे अनुभवों को अपने प्रदर्शन के माध्यम से व्यक्त करता है। इसमें वह परंपरा के साथ-साथ अपनी अमूर्त भावनाओं को भी मूर्त रूप देता है, यही रचनात्मकता है। संगीत की शैली चाहे जो भी हो, रचनात्मकता भारतीय संगीत में कला का मार्गदर्शन कराती है। जिससे प्रस्तुतकर्ता और श्रोता के मन पर प्रभाव पड़ता है। जैसा कि सर्वोपरि है, संगीत कला के अस्तित्व का माध्यम कलाकार है। जिस प्रकार कोई व्यक्ति अपनी आजीविका, अपनी सुविधा और अपनी खुशी के लिए अपनी इच्छा के अनुसार चीजें खरीदता या बनाता है, उसी प्रकार एक कलाकार अपनी कला के विस्तार के लिए उसमें रचना का निर्माण करता है। यही रचना रचनात्मकता का रूप ले लेती है। एक कलाकार से अपेक्षा की जाती है कि वह शिक्षित, जानकार, सामंजस्यपूर्ण व्यक्तित्व वाला और रचनात्मक स्वभाव वाला हो। एक कलाकार संगीत की कला गुरु से सीखता है। कला को बनाए रखने के लिए अभ्यास किया जाता है। जैसे-जैसे रियाज़ का समय बढ़ता है, वैसे-वैसे रचनात्मकता भी बढ़ती है। संगीत की रचना के लिए कलाकार के मन में ज्ञान, भावना और क्रिया का निरंतर आदान-प्रदान होता रहता है। रचना मूलतः एक ज्ञान-आधारित शैक्षिक दृष्टिकोण है। यह एक जन्मजात गुण है जिसे सिखाया नहीं जा सकता, लेकिन देखकर, सुनकर और समझकर सीखा जा सकता है। रचनात्मकता का अर्थ है उत्पादन क्षमता, चीजों को बनाने की क्षमता, कल्पना आदि। इस बात से यह ज्ञात होता है कि रचना से ही रचनात्मकता का विकास हुआ है। रचनात्मकता का तात्पर्य सृजनात्मकता, रचना शक्ति, निर्माण शक्ति इत्यादि। कलाकार अपने अन्तर्ज्ञान से विभिन्न प्रकार की कृतियों व बंदिशों का निर्माण करता है। कृतियों व बंदिशों की रचना कलाकार की रचनात्मकता को उजागर करती है। यदि रचनात्मकता का सही अर्थ खोजा जाए, कलाकार अपनी अंतर्दृष्टि, कल्पना और सृजन से दर्शकों को मंत्रमुग्ध करदे तो इसे रचनात्मकता कहा जा सकता है।

ठेके में भराव एवं रचनात्मकता

ठेके का ताल पद्धति के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान है। ठेका शब्द ताल वाद्ययंत्रों का सबसे बुनियादी और महत्वपूर्ण शब्द है। इसका प्रयोग गायन, वादन एवं नृत्य के साथ किया जाता है। ठेका वर्णों का वह समूह है जिसके बिना तबला अधूरा है। ताल की शुरूआत ही ठेके से प्रारम्भ होती है। ठेके के बिना ताल का कोई अस्तित्व नहीं है। ठेका वर्तमान उत्तर भारतीय संगीत प्रणाली में ताल का पर्याय बन गया है। लगभग दो शताब्दी पूर्व शास्त्र सम्मत प्रबन्ध गायन के आधार पर ध्रुपद गायन का प्रचलन था। उनके बगल में एक ताल धारक बैठता था, जो हाथ से ताल द्वारा संगीत में समय की गणना करता था। लगभग पूर्व नियोजित गायन के साथ-साथ पखावज वादक, नपे-तुले बोल बजाता था। ख्याल गायन का आविष्कार मुस्लिम शासन काल में हुआ था। आमतौर पर ख्याल गायन की लय काफी धीमी होती है। इसमें गायक को अपनी कल्पना के अनुरूप राग का विस्तार करने और कला को स्थापित करने का पूरा अवसर मिलता है। अतः कलाकार को एक ऐसे आधार की आवश्यकता होती थी, जिसमें उसे लय की प्रत्येक मात्रा, विभाग, ताली, खाली आदि स्पष्ट रूप से दिखाई पड़े। शायद इसी जरूरत को पूरा करने के लिए ताल वादकों ने जिस विद्या का आविष्कार किया, उसे ठेका कहते हैं।

भारतीय संगीत के अंतर्गत गीत को आधार तथा वाद्य को उसका अनुयायी एवं उपरंजक बताया गया है। शास्त्रीय संगीत में, समय को संगीत के साथ ताली बजाकर या संगीत वाद्ययंत्रों की थाप से मापा जाता था और सुंदरता बढ़ाने के लिए नादाक्षरों का उपयोग करके अवनद्ध वाद्य बजाया जाता था। बाद में, अवनद्ध वाद्यों पर ताल प्रस्तुतिकरण द्वारा गायन, वादन तथा नृत्य को सम्यक् बनाने तथा सौन्दर्यवृद्धि का प्रयोजन किया जाने लगा। उत्तर भारतीय संगीत, विशेषकर तबला वादन में निहित सौंदर्य और आकर्षण, सभी संगीत शैलियों के आकर्षण को दोगुना कर देता है। तबला बजाने में सौंदर्य की भावना प्राथमिक प्रेरणा है। सौंदर्य कलाकार के हृदय में उत्पन्न होता है और विभिन्न माध्यमों से अभिव्यक्त होता है। सांगीतिक प्रस्तुतिकरण में अनबद्ध या तालविहीन संगीत आरयक संगीत है। बिना ताल के केवल स्वरों का आनन्द ह्रदय में उल्लास व उतेजना का सृजन करने में असमर्थ होता है एवं अनबद्ध संगीत के निरन्तर श्रवण से हद्वय में उदासीनता छा जाती है। ताल को सार्थक बनाने के लिए उत्तर भारतीय संगीत में विभिन्न मात्राओं की तालों के ठेकों का निर्माण हुआ। ठेका वादन के द्वारा ताल के मूल स्वरूप को अभिव्यक्त करते हुए विविध पाटाक्षरों से उसमें लय, यति, छन्द, ग्रह, प्रस्तार इत्यादि का प्रयोग किया जाता है। अर्थात् ठेका ताल के निश्चित स्वरूप को प्रकट करने वाली आधारभूत रचना है। गायक, वादक तथा नर्तक को ध्यान में रखकर उन्हे बेताला होने से बचाना ठेके का मुख्य उदेश्य होता है।

मध्यकाल में ठेके का उद्भव धुरपद-धमार की संगति के लिए हुआ। धीरे-धीरे ख्याल गायन के विकास के साथ ठेके का महत्व भी बढ़ गया। ताल वादक को धीरे-धीरे और लयबद्ध तरीके से ठेका बजाकर कलाकार को मजबूत समर्थन देना होता है। इसी तरह, विभिन्न गायन शैलियों की संगत के लिए अलग-अलग तालों के ठेके बनाए गए। ध्रुपद-धमार के लिए खुले बोलों वाले पखवाजी ठेके एवं ख्याल, टप्पा, ठुमरी ग़ज़ल, भजन आदि के लिए बंद बोलों पर आधारित तबले पर बजने वाले ठेकों आदि की रचना की गई। इस प्रकार गायन की प्रत्येक शैली के लिए उसकी प्रकृति के अनुसार पखावज और तबला आदि के ठेकों का निर्माण होता चला गया। आगे चलकर ठेकों के बोलों को उलट-पलट कर उनके वज़न तथा चलन में परिवर्तन करके ठेकों को विविध रूप में प्रस्तुत किया जाने लगा। जैसे-जैसे संगीत बदला, वैसे-वैसे ठेकों में भी बदलाव आता चला गया। ठेके व उसके प्रकारों को जितनी सुन्दरता से बजाते हैं, उतना ही गायन, वादन व नृत्य के आनन्द का स्तर ऊँचा होता चला गया। ठेके को धीमी और तेज दो लय में बजाया जा सकता है।

स्वतंत्र वादन की शुरुआत में धीमी लय और तेज गति में ठेका बजाया जाता है, जिसमें ना धिन धिन ना, झाला और नृत्य तत्कार और तरना आदि तबला वादक की कड़ी मेहनत और कौशल को दर्शाते हैं। जहां तेज गति से ठेका बजाने में तबला वादक की तैयारी देखी जाती है, वहीं विलम्बित तबला बजाना वादक की समझ, अभ्यास और कौशल की अभिव्यक्ति है। जब भी कोई तबला वादक ठेका बजाता है तो वह पहले से यह तय नहीं करता कि वह ठेका का भराव किन-किन बोलों से भरेगा। तबला वादक को जो उचित लगता है, वह दर्शकों के सामने प्रदर्शित करता है। ठेके को भरने की यही कल्पना शक्ति रचनात्मकता पैदा करती है। तबला वादक विभिन्न तरीकों से ठेका भरकर रचनात्मकता पैदा करते हैं।

धाऽतिट धिंऽतिट धिऽधिंऽ धाधातिरकिट।

x

धाऽतिट धिंऽतिट धिंऽधिंऽ धाधातिरकिट।

2

धाऽतिट तिंऽतिट तिंऽतिंऽ तातातिरकिट।

0

धाधातिरकिट धाऽधाधा तिरकिटधा धाधातिरकिट।

3

इस ठेके में कलाकार ने तिट व तिरकिट बोल के माध्यम से रचनात्मकता उत्पन्न की है।

धा धिं धिं धा।

x

धा धिं धिं धा।

2

धा तिं तिं ता।

0

तिरकिट धाऽतिर किटधाऽ तिरकिट।

3

इस ठेके के प्रकार के अन्तर्गत तबला वादक ने अंत के चार बोल में तिरकिट का प्रयोग कर रचनात्मकता उत्पन्न की है।

स्वतंत्र तबला वादन के माध्यम से रचनात्मकता

तबला में कलात्मक रचनात्मकता दिल और दिमाग की उपज है। तबले की रचनात्मकता वादक के वादन को निखारती है। किसी भी वाद्ययंत्र की प्रतिष्ठा की स्थिरता उस वाद्ययंत्र की रचनात्मकता, कलात्मकता और मौलिकता के दायरे पर निर्भर करती है। स्वतंत्र तबला वादन की संस्कृति, उनकी सहजता, मौलिकता, सूक्ष्मता, स्वर आदि तबले की स्वतंत्र पहचान के कुछ प्रमुख तथ्य हैं। जब तबले के बोलों के माध्यम से स्वर, सुर, और लय का मधुर सामंजस्य स्थापित किया जाता है, तो एक विशिष्ट कला एवं कलात्मकता दर्शकों को प्रभावित करने में सफल होती है। तबले में कलात्मक रचनात्मकता के लिए मुखड़ा, मोहरा, तिहाई, लग्गी, लड़ी, फर्द, कायदा, रैला, पेशकार आदि का प्रयोग कलात्मक रूप से किया जाता है। स्वतन्त्र वादन में पेशकार, उठान, कायदे एवं रेले के गठन, लयबद्ध प्रदर्शन एवं उसकी कलात्मकता पर विशेष ध्यान दिया जाता है। प्राचीन काल से ही रचनात्मकता का विकास होता रहा है। राजा-महाराजाओं के समय से ही तबला वादकों के बीच अपनी कला दिखाने के लिए प्रतियोगिताओं का चलन था। राजाओं से प्रशंसा और पुरस्कार पाने के लिए तबला वादकों ने अपनी कल्पना, समझ और मेहनत से तबला वादन में कुछ नया करने का प्रयास किया, यही सोच आगे चलकर रचनात्मकता में बदल गई। रचनात्मकता का ही परिणाम था कि तबला वादकों ने अपनी रचनात्मक शक्ति से एक नई विधा को जन्म दिया, जिसे घराना नाम दिया गया। प्रत्येक घराने का

अपना अलग अस्तित्व था। दिल्ली घराने की शुरुआत के साथ-साथ अन्य घराने भी बढ़ते गए। इन घरानों का अपना अलग अस्तित्व, अलग वादन शैली, अलग लयकारियां, अलग बन्दिशें इत्यादि अपनी अलग ही पहचान थी। स्वतंत्र वादन की शुरुआत में ठेका बजाया जाता है। वादक शुरुआत में ठेका बजाता है ताकि श्रोताओं को पता चले कि तबले पर कौन सा ताल बजाया जाने वाला है। स्वतंत्र वादन के अंतर्गत, बंदिश को आधार देने के लिए हर बंदिश की शुरुआत से पहले ठेका बजाया जाता है।

तीन ताल का ठेका

धा	धिं	धिं	धा।	धा	धिं	धिं	धा।
X				2			
धा	तिं	तिं	ता।	ता	धिं	धिं	धा।
0				3			

.	धाऽत्रक	धिंऽत्रक	धिंऽधिंऽ	धाधातिरकिट।
	x			
	धाऽत्रक	धिंऽत्रक	धिंऽधिंऽ	धाधातिरकिट।
	2			
	धाऽत्रक	तिंऽत्रक	तिंऽतिंऽ	तातातिरकिट।
	0			
	धाधातिट	धाऽधाधा	तिटधाऽ	धाधातिट।
	3			

इस ठेके के अन्तर्गत ठेके के भराव के लिए त्रक तिरकिट तिट व धाधा बोल के माध्यम से रचनात्मकता प्रस्तुत की गई हैं। बोलों के माध्यम से भराव करके हम तबला स्वतन्त्र वादन के अन्तर्गत रचनात्मकता कर सकते है।

तबला संगत में रचनात्मकता

जब कोई तबला वादक, गायन या नृत्य के साथ-साथ तबला बजाता है तो उसे संगत कहा जाता है। संगत करने के लिए ठेका अत्यन्त साफ, वज़नदार, माधुर्यपूर्ण तथा विलम्बित व द्रुत गतियों में तैयारी के साथ बजाया जाता है। गायक के गायन को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए ठेके को विभिन्न प्रकार से बजाया जाता है तथा ठेके के अन्तर्गत में लग्गी, लड़ी आदि का प्रयोग कर प्रस्तुति को अधिक प्रभावशाली बनाया जाता है। गजल, भजन, लोक गीत आदि गायन शैलीओं में एक ही ताल का अलग-अलग प्रकार के प्रयोग से तबला संगत में सौंदर्य पैदा होता है। इसलिए संगतकार अपनी तालों में ऐसे बोलों का चयन करता है, जिनमें चंचलता, चपलता और गंभीरता का भाव हो। भारतीय संगीत की कई गायन शैलियाँ हैं जैसे ध्रुपद, धमार, ख्याल, तराना, भजन, ग़ज़ल, लोक गीत आदि जो तबले के साथ गाई जाती हैं। ध्रुपद और धमार के साथ पखावज का प्रयोग होता है। लेकिन आजकल तबला पर चारताल और सूलताल आदि भी बजाई जाती हंै। ख्याल के साथ एकताल, तीनताल, झपताल आदि तालों का प्रयोग किया जाता है। ठुमरी गायन के साथ जतताल और दीपचंदी ताल बजाई जाती है। इसी प्रकार भजनों में तबला संगतकार कहरवा, दादरा रूपक आदि तालों में लग्गी, लड़ी बजाकर रचनात्मकता पैदा करता है। इसी प्रकार से नृत्य

के साथ संगतकार द्वारा तबले पर तीनताल में कुछ खास बोल एवं छोटी-छोटी थापों का प्रयोग किया जाता है, जो नृत्य के साथ तालमेल खाते हैं।

निष्कर्ष

अतः में यह कहा जा सकता है कि प्रस्तुत शोध पत्र में ठेकों के भराव की विधि से रचनात्मकता, बोलों के माध्यम से रचनात्मकता, विभिन्न घरानों के तबला वादन में रचनात्मकता, लय के माध्यम से रचनात्मकता, कलाकार किस प्रकार रचनात्मकता दिखा सकते हैं। कहरवा, दादरा, रूपक आदि तालों के ठेकों का संगत के रूप में प्रयोग करके हम तबले की तालों के माध्यम से रचनात्मकता ला सकते हैं।

संदर्भ

मिस्त्री, डा. आबान ए., (1984), पखावज और तबला के घराने एवं परम्परायें, स्वर साधना समिति, बम्बई।
मिश्र, पंडित विजय शंकर, (2005), तबला पुराण, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।
राम, डॉ. सुदर्शन, (2000), तबले के घराने वादन शैलियां एवं बंदिशैं, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।
शुक्ल, योगमाया, (2003), तबले का उद्गम, विकास और वादन शैलियां, हिन्दी माध्यम कार्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।
मराठे, डॉ. मनोहर, भालचंद्रराव, ताल वाद्य शास्त्र: एक विवेचन, शर्मा पुस्तक सदन ग्वालियर।
कर्ण डॉ. नागेश्वर लाल, (2001) कथक नृत्य के साथ तबला संगति, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली
चिश्ती, डॉ. एस. आर., तबले के दस अंको का महत्तव, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली।